CHAPTER 13

EDUCATION

Doctoral Theses

01. ARORA (Bhawana)
Understanding the Socio-Economic Environment and its Impact on Science as a Subject in Delhi Schools.
Supervisor : Dr. D Parimala
Th 22793

Abstract
(Verified)

Globalization and the spread of market relations to every sphere of society have important implication for education, including school education. School education is an important segment of the total education system and contributes significantly to the development of the individual and the nation. It lays the foundation of the knowledge-based society and is the most powerful tool for the overall improvement of the system. There has been an enormous increase in number of schools since independence, especially private schools, but still school system is reeling under the impact of many changes due to globalization. These are the issues that are of national significance and call for immediate attention of government and civil society. In the present study, an emerging issue in the schools in Delhi, regarding the status of science stream at senior secondary stage, has been taken up. A concern has been raised globally regarding the decline in enrolments in science and a sudden increase in the enrolments in courses related to management and finance. This trend is becoming prominent in schools in Delhi, where, enrolments in science are decreasing, especially in government schools. The study focuses on this issue from the lens of globalization. How globalization is effecting educational policies and playing a major role in the emerging trends in science as a subject in schools in Delhi. Globalization is also leading to emergence of new opportunities and economic aim of education. We are now in the modern century and instead of promoting science, we are facing a decline in the status of science courses from the very beginning agencies, i.e. schools. Hence to understand and explore the perception of science courses in the contemporary globalized society, the status of science in schools is imperative

Contents

1. Theoretical framework 2. Policy and practice of globalization in education with special focus to Delhi 3. Globalization and school education with special focus to science stream 4. Research methodology 5. Data analysis and interpretation 6. Findings, conclusion and areas of further research. Bibliography. Annexures.

02. ASHISH RANJAN
History Curriculum of Bangladesh, India and Pakistan: A Comparative Study.
Supervisors : Dr. Nina Dey Gupta and Prof. Shyam B. Menon
Th 23113

Contents

1. Introduction 2. Review of related literature 3. Design of the study 4. Data and analysis 5. Conclusion. Bibliography. Annexures.

03. बजाज (अभिलाषा)

विद्यार्थी अनुभव जगत, निर्धारित पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया : एक अंतर्संबंधात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. नीरा नारंग

Th 22794

सारांश

(सत्यापित)

शिक्षा का उद्देश्य मानव का संर्वागीण विकास है। शिक्षा पद्यति से अपेक्षित है कि वह विद्यालयी शिक्षा और जीवनानुभवों के बीच तालमेल बिठा सके। परन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा 2005 में चिंता व्यक्त की गई है कि विद्यार्थी विद्यालयी विषयों और जीवनानुभवों में संबंध नहीं देख पाते और परीक्षा में अच्छे अंक लाने को ही शिक्षा समझने लगते हैं। विद्यालयी विषय कक्षा-शिक्षण एवं विद्यार्थियों के अनुभवों के मध्य संबंधों को जानने हेतु इस शोध कार्य की आवश्यकता हुई। शोध उद्देश्यः- कक्षा 6-8 की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करके उनमें निहित सामाजिक अनुभवों के प्रसंगों का अभिनिर्धारण। विद्यार्थियों के सामाजिक अनुभवोें को पाठ्यवस्तु से जोड़कर उन्हें अधिगम प्रक्रिया में अंर्तगुम्फित करने की दृष्टि से कक्षा संव्यवहार का वस्तुस्थितिपरक अध्ययन। शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कक्षा 6-8 की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण द्वारा पाठ के उन प्रसंगों को पहचाना गया जो विद्यार्थियों को उनके जीवनानुभवों से जोड़ने के अवसर प्रदान करते थे। साथ ही भाषाध्यापकों से उनके पाठ संबंधी विचार जाने गए। तत्पश्चात भाषाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में शामिल करने के प्रयासों को परखते हुए विद्यार्थी सहभागिता पर टिप्पणी की गई। पाठ्यपुस्तकीय विश्लेषणों से पता चला कि विषयवस्तु में एेसे प्रसंग हैं जो विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तार दे सकते हैं। कक्षा में प्रयुक्त शिक्षण विधियाँ इस दिशा में महत्वपूर्ण हैं। कक्षा प्रेक्षण से अध्यापकों के चार वर्ग सामने आए। प्रथम वर्ग में शिक्षकों ने अभिमत में पाठ संबंधी बातों को बताया परन्तु कक्षा में विद्यार्थियों के अनुभवों को अनदेखा किया। दूसरा वर्ग पाठ के एेसे प्रसंगों को खोजता है किंतु विद्यार्थियों तक संप्रेषित नहीं कर पाता। तीसरे वर्ग ने इन प्रसंगों से जुड़ी औपचारिक चर्चा नहीं की परन्तु प्रभावी शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को पाठ से जोड़ा। अंतिम वर्ग में शिक्षकों ने इन प्रसंगों को पहचाना तथा विद्यार्थियों के अनुभवों को पाठ से जोड़ा।

विषय सूची

1. भूमिका 2. संबद्ध साहित्य सर्वेक्षण 3. शोध-अभिकल्प तथा कार्यविधि 4. दत्त सामग्री का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या 5. निष्कर्ष एवं सुझाव। संदर्भ-स्रोत एवं परिशिष्ट।

04. JOY (Alex P.)

Beliefs, Practices and Perceptions of Beginning Teachers: An Exploration.

Supervisor : Dr. P. Mohan Raju

Th 23112

Abstract

(Verified)

The success of reforms in school education depends largely on the teachers. One of the important phase in the career cycle of teachers is that of beginning teacher. Teachers' beliefs play an important role in every aspect of teaching and learning, increasing interest has revived to study the beliefs of beginning teachers. Classroom transactional practices are also impacted by the beliefs a teacher holds. This research was an effort in the direction of studying the beliefs and practices of beginning science teachers. The Challenges the beginning teachers face related to content, teaching learning process, learners and the school environment were studied. Various factors in the school context which contribute to their Motivation, and Perception of Success were also examined. The study also looked at the

interplay between Beliefs, Transactional practices, Challenges faced and the Perceptions of Success of beginning science teachers. The field of study was 2 districts of Andhra Pradesh. Using both Qualitative research and Quantitative research approaches, multiple data were collected with interviews (47 beginning teachers), classroom observations (58 beginning teachers x 5 times) and 3 questionnaires (158 beginning teachers). The results revealed that the 'stated' beliefs and the observed classroom practices of beginning science teachers were either teacher-centered or transitional, which were inconsistent with the expectations from the Andhra Pradesh State Curriculum Framework 2011. The major challenges faced were related to Lack of resources, Teaching-learning process and the learner characteristics. Satisfaction with own teaching, student teacher relationship and professional rewards were found most Motivating. Moreover, professional commitment, students' achievement and support system contributed most to Perception of Success; while Work-load did not. The results revealed that teacher's Beliefs were a significant predictor of teaching-learning practices in the class. The findings imply appropriate pre-service and in-service education to modify the beliefs and practices, which ultimately benefit the learner.

Contents

1. Introduction 2. School education: The context 3. Review of literature and conceptual framework 4.Method of the study 5. Results and discussion 6. Some anecdotes 7. Summary. References and appendices.

05. मिश्र (ऋषभ कुमार)

बच्चों में सामाजिक विज्ञान की समझ : उनके दैनंदिन ज्ञान और विद्यालयी ज्ञान के पारस्परिक संबंध का अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. भारती बावेजा और प्रो. नमिता रंगनाथन

Th 22792

सारांश

(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध कार्य सामाजिक विज्ञान के अध्ययन-अध्यापन के विशेष संदर्भ कक्षा-विमर्श को अध्ययन की इकाई मानते हुए सीखने की संस्कृति की व्याख्या पर केन्द्रित है। इस अध्ययन के उद्देश्य थे-s विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान के प्रचलित कक्षा विमर्शों का विश्लेषणs विद्यार्थियों के विद्यालयेतर विमर्श की व्याख्या। s सामाजिक विज्ञान की अवधारणाओं के विशेष संदर्भ में विद्यार्थियों के दैनंदिन ज्ञान की व्याख्या।s सामाजिक विज्ञान की कक्षा में विद्यार्थियों की कर्तृत्व (एजेंसी) को संपोषित करने वाले शिक्षणशास्त्रीय परिवेश की प्रक्रिया और प्रभाव की विवेचना।प्रस्तुत शोध कार्य को व्याख्यात्मक आधार संरचना (इण्टरप्रेटिप पैराडाइम) के अन्तर्गत गुणात्मक शोधविधियों द्वारा सम्पन्न किया गया। इस अध्ययन से पता चलता है कि- विद्यालय की संस्थागत संरचना और संस्कृति कक्षा में प्रस्तुत विषयवस्तु, शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध और शिक्षणशास्त्रीय युक्तियों को प्रभावित करती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षकों द्वारा कक्षा विमर्श में प्रस्तुत विषयवस्तु को ''वैज्ञानिक'' माना गया है जो अनुमानों, विश्वासों और दैनिक अवलोकनों पर आधारित न होकर प्रमाण आधारित है। इस अध्ययन द्वारा स्थापित होता है कि विद्यार्थियों का कार्यात्मक ज्ञान और आनुभविक जीवन उन्हें सामाजिक यथार्थ के आँकड़ों से युक्त कर रहा है जिसका प्रयोग कक्षा विमर्श की रचना में किया जा सकता है। यदि सामाजिक विज्ञान की कक्षा को सीखने वालों के समुदाय के रूप में परिकल्पित करते हुए 'अथेनटिक एक्टिविटी' के माध्यम से शिक्षणशास्त्रीय परिवेश का विकास किया जाए तो ऐसे परिवेश में दैनंदिन विमर्श और कक्षागत विमर्शों का पारस्परिक संबंध मजबूत होता है जो कक्षा में विद्यार्थियों के कर्तृत्व के संपोषण और विकास का माध्यम बनता है। इस परिवेश द्वारा विद्यार्थियों के संदर्भ जनित विमर्श को कक्षा में आमंत्रित करके सीखने के दैनंदिन तरीकों और ज्ञानानुशासन के तरीकों में अलगाव को समाप्त किया जा सकता है।

विषय सूची

1. शोध परिचय : पृष्ठभूमि, प्रासंगिकता और प्रविधि 2. सामाजिक विज्ञान : प्रकृति और शिक्षणशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य 3. सामाजिक विाान के प्रचलित कक्षा विमर्श 4. विद्यार्थी और विद्यालयेतर विमर्श 5. कक्षा में दैनंदिन ज्ञान और विद्यालयी ज्ञान का पारस्परिक संबंध : प्रक्रिया और प्रभाव 6. निष्कर्ष और निहितार्थ। संदर्भ ग्रंथ सूची एवं परिशिष्ट।

06. PARUL
Inequality in Access to Higher Education: A Study of Educational Aspirations, Experiences and Pathways of Scheduled Castes.
Supervisor : Dr. P. Mohan Raju
Th 22795

Contents

1. Introduction 2. Methodology and fieldwork 3.Understanding the field 4. Inequalities in access and higher education choices 5. Educational aspirations and expectations 6. Educational Experiences and pathways 7. Conclusion: Understandings and considerations. Appendices. References.

07. प्रपन्न (राघवेन्द्र)
भाषा-शिक्षण का शिक्षणशास्त्रीय एवं सामाजिक दार्शनिक जगत।
निर्देशिका : प्रो. रमा मैथ्यू
Th 22796

सारांश
(असत्यापित)

'भाषा-शिक्षण का शिक्षणशास्त्रीय एवं सामाजिक-दार्शनिक जगत' शोध प्रबंध पिछले डेढ़ दशकों के की पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी)- द्वारा विकसित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों को अपना विषयक्षेत्र बनाता है। शोध के उद्देश्य- आलोचनात्मक चिंतन के संदर्भ में हिन्दी की पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों की अवस्थिति एवं उनकी परस्पर संगति-असंगति की पड़ताल करना; विद्यार्थियों के परिवेश को शामिल करने के संबंध में हिन्दी की पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों की अवस्थिति एवं उनकी परस्पर संगति-असंगति की स्थिति का आकलन करना तथा; हिन्दी की पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों एवं विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की दुनिया-संसार, उनकी आवाज, उनके संघर्षों और उनसे संबंधित साहित्य के प्रति रवैये की समीक्षा करना है। इस शोध अध्ययन में दो केन्दीय शब्दावली- पहला शिक्षणशस्त्रीय एवं दूसरा सामाजिक दार्शनिक है। शिक्षणशास्त्रीय शब्दावली में पड़ताल की जिन कसौटियों को शामिल किया गया है वे हैं- आलोचनात्मक िंचंतन के प्रति पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें (राजनैतिक चेतना निर्माण के प्रति, विवादास्पद माने जाने वाली परिघटनाओं के प्रति मानस, पाठ्यपुस्तकों की अधिाकतम जगह लेने वाले सरोकार/मुद्दे, पाठ्यपुस्तक के भरोसेमन्द, साहित्यिक धारा के अनुसार पाठ्यपुस्तकों का मानचित्र, समकालीन से संवाद, नमूने के तौर पर अभ्यास प्रश्नों की पड़ताल) और विद्यार्थियों के समाजो-सांस्कृतिक पृ"ठभूमि से संवाद। समाजिक दार्शनिक की कसौटियाँ हैं- महिला सरोकार का संदर्भ, दलितों के प्रति पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकें, अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व का सवाल, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों का संज्ञान, सजगता और संवेदनशीलता। उपरोक्त कसौटियों के संदर्भ में शोध का यह निष्कर्ष है कि पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तक के स्तर पर गहरी असंगतियाँ हैं। पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों का

आपसी चरित्र असंवादी है। पाठ्यपुस्तकों का समकालीनता से संबंध पिछड़ी हुई अवस्था में है। भारत के संदर्भ में उपलब्ध शैक्षिक दस्तावेज़, विमर्श एवं शोध अध्ययनों सहित पिछली पाठ्यचर्याओं से इनका संबंध विच्छेद है।

विषय सूची

1. प्रस्थान संदर्भ 2. शोध अध्ययन का विमर्शगत आधार एवं ज़रूरत 3. शोध विषय तक पहुँच बनाने का तौर-तरीका 4. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुसतकों का जगत : संगतता बनाम बेलाग होने का सवाल 5. शोध से निकला परिदृश्य, व्याख्या एवं विवेचना 6. उपसंहार। संदर्भ सूची।

08. SAROHE (Seema)
Conceptions of Ctizenship in the Education of Teachers.
Supervisor : Prof. Poonam Batra
Th 22797

Abstract
(Verified)

This study, based on exploring the complexity and nuances of student-teachers' conceptions of citizenship of two popular teacher education programmes in Delhi, reveals that notions of citizenship are also shaped through the experiences provided during processes of teacher preparation. It highlights the fact that teacher education programmes are critical in influencing notions of citizenship either by way of reinforcing prevalent notions or in expanding the horizons within which citizenship is understood and practised. This study makes a strong empirical case for taking the curriculum and pedagogic processes of preparing teachers seriously, especially if educators still hold the conviction that teachers can play a critical role in social transformation.

Contents

1. Introduction 2. Review of literature: Citizenship, school curriculum and teachers 3. Methodology 4. Conceptions of citizenship-I 5. Conceptions of citizenship-II 6. Shaping conceptions of citizenship 7. Conclusion. References. Annexures.

09. SHARMA (Sujata)
Social Constructivism and its Role in English Language Learning.
Supervisors : Dr. Jyoti Kohli and Dr. Geeta Sahni
Th 22798

Abstract
(Not Verified)

The Learners in school, not only need to gain academic exellence in English but also need to become independent learners to face life, beyond the classroom. Modern Pedagogy is moving increasily to the views that learners should be aware of their ow thought process and the it is crucial for the pedgogical theories and the teacher a like, to help them become more metacognitive. The study examies whether social constructivism could play a Positive role in English Language Learning. Language learning is a common process. It requires the development of LSRW skills and Vocabular enrichment. Research Methodolgy The Present research was conducted in 3 Phases, as follows: Phase-1 to facilitate the learners understanding of the general classroom processes, learners autonomy, Language learning strategies, critical thinking and reflective learning, the survey method was employed to collect data based on the questionnaires developed to collect data. Phase -2 the data from the questionnaires was analyzed and the major findings were the basis for developing the modules. The Statements from the questionnaire constituted the objectives of each task developed for the modules. Phase-3 one module was selected for tryout in an actual classroom sitting. The module taught and the learnes task sheets were analyzed through the analysis of the teachers assessment sheet and the learners responce sheet. The Learners could think, evaluate and analyse the given facts, they could take the story further. The

Module Best Seller by O Henry,agve the learning the opportunity to explore the text through scaffloded tasks and helped in making learning a fruitful exploration. The tryout indicated that learners were able become autonomous who could critically think and reflect and reach conclusion through shared and understanding in group and pair work.

Contents

1. Introduction 2. Language learning and social constructivism: A theoretical perspective 3. Developing the research tools 4. Analyzing the data 5. Developing the modules 6. Analysis of the module 7. Summary and conclusion. Bibliography. Appendices.

10. SHILPA RAAJ
Multilingual Classroom as a Resource: Implications for the Language Curriculum.
Supervisor : Dr. T. Geetha
Th 23114

Abstract
(Not Verified)

Educational models for indigenous and minority children which use mainly dominant languages as languages of of instruction can have extremely negative consequences because of the linguistic, cultural, psychological and pedagogical barriers they create. Advocating mother tongue-based multilingual education in the primary grades, the present study is based in Kahalgaon, a town and a municipality in Bhagalpur district in the state of Bihar, India. The primary objective of the study was to collect information on the status of the regional language Angika, listed as a vulnerable language by UNESCO. Teachers and learners of primary grades (I-V) of ten government schools were included in the study. The tools used were Structured and Unstructured Classroom Observations, Oral Tasks and Role Plays to assess the linguistic level of learners in their mother tongue (Angika) and the languages of instruction (Hindi and English). Language Use Survey and Literacy Attitudes Survey were conducted with the teachers to understand the linguistic environment. Teacher Questionnaires were used to elicit information about the languages and their uses in the community. Informal Discussions and Stuctured and Open-ended Interviews with the teachers focussed on the importance of mother tongue education in the primary grades. Subsequently English and Hindi language textbook analysis was done from Grades I- V to identify themes used to develop materials in both Angika and English. The objective was teaching of English (the target language) using Angika (the mother tongue) as an invaluable linguistic and cultural resource where Hindi was the link language, maintaining the true spirit of a multilingual classroom. The study ends with a discussion of the findings vis-a-vis capability deprivation and incomprehensibility leading to high 'push out' rates at the primary grades and makes a call for using the mother tongue of learners as a resource in the primary grades.

.

Contents

1. Introduction 2. Theoretical framework of the study 3. Prelude to the study 4. Grammar progression for the lower primary grades (II and III) 5. Language progression for the upper primary grades (IV and V) 6. Summary and conclusion. Bibliography. Appendices.

11. सिंह (अजय कुमार)
हिंसा के अनुभव और बच्चों की शिक्षा।
निर्देशक : प्रो. कृष्ण कुमार
Th 23148

सारांश
(असत्यापित)

हिंसा के अनुभवों और बच्चों की शिक्षा का क्या संबंध है, और कुछ है तो उसको समझने का तरीका क्या होगा, ये वे प्रारम्भिक सवाल थे जिसके इर्द-गिर्द इस शोध की शुरुआत हुई। यह शोध 'बदलाव' और 'अहिंसक समाज रचने' के सन्दर्भ में हिंसा के अनुभवों और बच्चों की शिक्षा के सम्बन्धों को समझने का एक प्रयास है। यहाँ गाँधी, टैगोर, अम्बेडकर और फ्रेरे के विचारों से बने एक परिप्रेक्ष्य के ज़रिये हिंसा, उसके विभिन्न रूपों और उनके पुनर्सृजन को समझने की कोशिश की गई है। ये विचार हमें हिंसा को मनुष्य की प्रकृति का अनिवार्य अंग मानने वाले सिद्धांतों, को खारिज करने का आधार देते है। इस अध्ययन के लिए बिहार के एक हिंसा प्रभावित गाँव में नृवंशशास्त्रीय विधि के जरिये गाँव की पारिस्थितिकी और बच्चों के हिंसा के अनुभवों को समझने की कोशिश की गई है। यह अध्ययन, नक्सल आन्दोलन से प्रभावित रहे इस गाँव के बच्चों के जीवन और उनकी शिक्षा को समझने का एक प्रयास है। बच्चे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों, कल्पनाओं, गढ़ी गई सूचनाओं, संचित अतीत और स्कूल के अनुभवों के आधार पर हिंसा के अनुभओं का पुनर्सृजन करते हैं। हिंसा को अनुभव करने की प्रकृति क्या होगी, यह इस पर निर्भर है कि उस अनुभव को महसूस करने वाले की 'पृष्ठभूमि' क्या है या हिंसा की घटनाओं का सामाजिक 'सन्दर्भ' क्या है। हिंसा जिस भावजगत और संज्ञान क्षेत्र का निर्माण करती है उससे निपटने के लिए स्कूल के जरिये अतीत के अनुभवों के एक सृजनात्मक पुनर्सृजन की बात सोची जा सकती थी। पर यह केवल उन स्कूलों के लिए विचार का विषय बन सकता है जो अपनी-अपनी निर्धारित भूमिकाओं के विस्तार के लिए तैयार हों।

विषय सूची

1. भूमिका - ग्रामीण बचपन, हिंसा और शिक्षा 2. हिंसा के अनुभवों और शिक्षा को समझने का परिप्रेक्ष्य 3. बिहार, भोजपूर और 'ए' गाँव - कार्य-क्षेत्र का एक संक्षिप्त ब्यौरा 4. हिंसा और बच्चों की शिक्षाः ग्रामीण बचपन और बच्चों के अनुभवों तक पहुँचने का तरीका 5. रोज़मर्रा का जीवन और बच्चों के अनुभव 6. हिंसा के अनुभव और उनकी पूनर्रचना 7. हिंसा और द्वंद्व के अनुभव के संदर्भ में बच्चों की शिक्षा 8. आक्रामकता की सीख, हिंसा और शिक्षा 9. उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ सूची